इकाई 7 सामाजिक एकीकरण*

इकाई की रूपरेखा

7.0 परिचय

7.1 सामाजिक एकीकरण क्या है?

7.2 सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत : सामाजिक एकीकरण विचार का आरंभ

7.3 अगस्टे कॉम्टे और सामाजिक एकीकरण का विचार

7.4 हर्बर्ट स्पेंसर और जैविक समानता

7.5 इमाइलदुर्खीम और सामाजिक एकीकरण का सिद्धांत

7.6 विसंगति और सामाजिक विघटन का विचार

7.7 दुर्खीम और सामाजिक मानव विज्ञान पर उनका प्रभाव

7.8 सारांश

7.9 संदर्भ

7.10 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- सामाजिक एकीकरण को परिभाषित करना;
- सामाजिक एकीकरण की अवधारणा की जड़ों को समझना;
- दुर्खीम के सामाजिक एकीकरण सिद्धांत की चर्चा करना;
- सामाजिक मानवविज्ञान में सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत का पता लगाना और उसकी सराहना करना; तथा
- सामाजिक विघटन और विसंगति की अवधारणाओं को समझना।

7.0 परिचय

मानवविज्ञान में एक सैद्धांतिक विचार के रूप में सामाजिक एकीकरण, बीसवीं सदी के आसपास स्थापित हो गया था। इससे पहले क्रमागत विकास बहुत लंबे समय तक सामान्य सैद्धांतिक ढांचा था, जिसने मानवशास्त्रीय ज्ञान का मार्गदर्शन किया।

मार्विन हैरिस लिखते हैं कि मानवविज्ञान मानव इतिहास के अध्ययन के रूप में शुरू हुआ। उन्नीसवीं सदी के मध्य में मानवविज्ञानी उन चरणों से बहुत अधिक रूचि रखते थे जिनसे मानव समाज गुजरे थे और आधुनिक यूरोपीय समाजों के अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुंचे थे। वे मानव समाज और संस्कृति में परिवर्तन के विचार में अधिक रूचि ले रहे थे। वे मुख्य रूप से यह सोच रहे थे कि समय के साथ मानव समाज कैसे बदल गया और समाज प्रत्येक चरण की किन विशेषताओं से गुजरा। हालांकि,

* **योगदानकर्ता**– डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

मानवविज्ञानी जो दावा कर रहे थे उसे साबित करने के लिए उनके पास बहुत कम साक्ष्य थे। उन्नीसवीं सदी के मध्य में ज्यादातर मानवविज्ञानी आर्म–चेयर मानवविज्ञानी (ऐसे मानवविज्ञानी जो घर बैठे शोध करते हैं,जो क्षेत्रकार्य में कभी गए ही नहीं) थे, जिन्होंने मानव समाज के प्रत्येक चरण के तर्क और दृष्टांत विभिन्न मिशनरियों, सैनिकों और यात्रियों के विवरण के आधार पर दिए, वे स्वयं कभी क्षेत्र में कार्य करने गए ही नहीं। इस प्रकार उनके तर्क अनुमान पर आधारित थे। इस सिद्धांत के कारण सामाजिक मानवविज्ञान में विकासवाद की तीखी आलोचना हुई। विकासवाद की प्रतिक्रिया में ब्रिटेन ने दो खेमों के गठन का नेतृत्व किया–पहला प्रसारवादियों के नेतृत्व में और दूसरा व्यवहारवादी के नेतृत्व में। दूसरे खेमे में सामाजिक एकीकरण का विचार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, आकार लेता है और स्थापित हो जाता है। सामाजिक मानवविज्ञान में कार्यात्मकता एक व्यापक शब्द है और इसे आगे दो समूहों में विभाजित किया गया है– मनोवैज्ञानिक कार्यात्मकता और संरचनात्मक कार्यात्मकता। मनोवैज्ञानिक कार्यात्मकता मालिनोवस्की के कार्यों से जुड़ी हुई है और संरचनात्मक या समाजशास्त्रीय कार्यात्मकता (जैसा कि कभी–कभी इसे इस नाम से भी पुकारा जाता है) ए. आर. रेडक्लिफ ब्राउन के कार्यों से जुड़ी हुई है। रेडक्लिफ, समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम के विचारों से प्रभावित थे। यद्यपि एक दृष्टिकोण और एक सैद्धांतिक ढांचे के रूप में सामाजिक एकीकरण को कार्यात्मकता के दोनों रूपों में पहचाना जा सकता है, लेकिन यह सामाजिक कार्यात्मकता में अधिक मजबूतदिखाई देती है।

मानवविज्ञान में कार्यात्मकता का सिद्धांत अनुशासन अध्ययन के कई बदलावों से जुड़ा है। कार्यात्मकता के उद्भव के साथ, मानवविज्ञान ने अपने द्वंद्वात्मक चरित्र का त्याग कर दिया और एक समकालिक विज्ञान बन गया। यह वर्तमान के अध्ययन में रुचि रखने लगा और इसने स्पष्ट साक्ष्य के अभाव में अतीत का अध्ययन करने का विचार छोड़ दिया। नृवंशविज्ञान में क्षेत्रकार्य मजबूती से स्थापित हो गया। सामाजिक एकीकरण के विचार को बनाने में इन सभी बदलावों का महत्वपूर्ण योगदान था (बर्नार्ड, 2000)।

7.1 सामाजिक एकीकरण क्या है?

हमारे रोजमर्रा के उपयोग में, सामाजिक शब्द का उपयोग हमारे संबंधों को चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। लोगों ने आपको 'सामाजिक' बनने के लिए कितनी बार कहा होगा? उनका क्या अर्थ है? इससे उनका अर्थ, बाहर जाकर दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मेलजोल करना है। जब हम अपना समय अकेले बिताते हैं और लंबे समय तक हम लोगों के साथ नहीं मिलते हैं,तो हमें 'सामाजिक नहीं होने' के रूप में चिन्हित किया जाता है।कोरोना महामारी में हम सभी अब 'सामाजिक दूरी' शब्द से परिचित हैं।समय के साथ हम सब तालाबंदी (लॉकडाउन) के कारण अपने घरों तक सीमित हैं और हमारे यहां सभाओं और सामाजिक मेलजोल पर प्रतिबंध है।हालाँकि हम लोगों से ऑनलाइन मिले, लेकिन हमें सामाजिक मेलजोल पसंद है।शादी के समारोह, जन्मदिन की पार्टियों और इस तरह के अन्य समारोहों को प्रतिबंधित किया गया है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि इस अनुभव के माध्यम से हमें सामाजिक शब्द की समझ प्राप्त होती है। यह एक ऐसा शब्द है जो हमारी क्षमता और दूसरों के साथ जुड़े रहने की जरूरत को दर्शाता है। यह सामूहिकता और सामंजस्य की भावना को दर्शाता है। हम उन गतिविधियों के लिए 'असामाजिक' शब्द

का भी उपयोग करते हैं जो सामूहिक चेतना और मानव अस्तित्व की सामूहिक प्रकृति के विपरित जाते हैं।

दूसरी ओर एकीकरण शब्द को कैम्ब्रिज शब्दकोश द्वारा एक क्रिया या लोगों के एक अलग समूह के साथ सफलतापूर्वक जुड़ने या मिलाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। यदि हम इस परिभाषा का विस्तार करें तो हम यह भी कह सकते हैं कि एकीकरण एक साथ विभिन्न इकाइयों को जोड़ने की प्रक्रिया है। इन विभिन्न इकाइयों को समाज के अलग अलग पहलूओं या संस्थान के रूप में देखा जा सकता है। समाज एक विषम इकाई है, जिसमें रहने के लिए संतुलन और समाज की विभिन्न इकाइयों के बीच एक व्यावहारिक एकता होनी चाहिए। हमें संयुक्त शब्द सामाजिक एकीकरण के एक अर्थ तक पहुंचने के लिए दोनों शब्दों, सामाजिक और एकीकरण को एक साथ जोड़ना होगा। अब हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ समाज की विभिन्न इकाइयाँ या सामूहिकता जिसे हम समाज कहते हैं, वह संतुलन की स्थिति में है। समाज की विभिन्न इकाइयाँ आपस में जुड़ती हैं या मिश्रित होती हैं, इसलिए हम समाज को व्यक्ति और सामूहिकता की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने वाली एक कार्यात्मक इकाई के रूप में पाते हैं।

इसके अलावा, हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। यह सच भी है ,व्यक्ति सामाजिक समूहों की सामूहिकता और सामूहिक पहचान से अविभाज्य है। व्यक्ति को केंद्र में रखते हुए, सामाजिक एकीकरण को "सामाजिक संबंधों को समाज से व्यक्तियों को जोड़ने की ताकत" के रूप में परिभाषित किया गया है(स्टॉली, 2005;250)। इसलिए, सामाजिक एकीकरण को सामाजिक समूहों और व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों के रूप में देखा जा सकता है। सामाजिक मानवविज्ञान में, सामाजिक एकीकरण की अवधारणा और विचार बीसवीं सदी के दौरान आया। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, जब विकासवाद समाज को समझने के सैद्धांतिक चलन से बाहर हो गयातो अतीत को क्रम में देखने का विचार वर्तमान को समझने के क्रम में आक्रमक हो गया। इसके बजाय, अब यह माना और सोचा जाने लगा कि समाज को समझने के लिए हमें केवल वर्तमान की जांच करने की आवश्यकता है। यह एक बदलाव था ,जो एक द्वंद्वात्मक समझ से समाज के एक समकालिक दृष्टिकोण के प्रति समाज को देखा गया था जैसा कि वह अब दिखाई देता है। 'इस विचार प्रक्रिया के भीतर प्रमुख विषय यह समझना था कि समाज कैसा है और यह खुद को कैसे बनाए रखता है।'एक विशेष समाज का उसकी समग्रता में अध्ययन किया जाने लगा, अर्थात् समाज को बनाने वाली विभिन्न संस्थाओं का अध्ययन किया गया। समाज को एक सीमा के साथ, परस्पर संबंधित भागों के साथ समग्रता के रूप में देखा जाता था विद्वानों ने यह समझाने का प्रयास किया कि समाज के विभिन्न अंग अर्थात् धर्म, राज्य व्यवस्था, अर्थशास्त्र आदि विभिन्न संस्थाएँ किस प्रकार कार्य करती हैं और समग्र रूप से समाज को बनाए रखने के लिए वे एक–दूसरे से कैसे संबंधित हैं। हालांकि यह सच है कि सामाजिक मानवविज्ञान में इस विचार को केवल बीसवीं शताब्दी के दौरान ही प्रचलन मिला, लेकिन इस विचार के बीज सामाजिक विज्ञानों में उससे पहले भी मौजूद थे (स्टॉली, 2005)।

अपनी प्रगति जाँचे 1

1) सामाजिक एकीकरण को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

7.2 सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत : सामाजिक एकीकरण विचार काआरंभ

इससे पहले कि हम सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत को समझे, सामाजिक नृवंशविज्ञानियों और समाजशास्त्रियों द्वारा आगे बढ़ाए गई सामाजिक एकीकरण के दार्शनिक तरीको को समझना आवश्यक है। यह सब दार्शनिक सवालों से शुरू होता है, जैसे समाज कब और क्यों बनाए गए ? सामाजिक व्यवस्था में रहने की क्या जरूरत थी? समाजों के अस्तित्व से पहले मनुष्य कैसे रहते थे? क्या मानव अस्तित्व में कोई ऐसा चरण था जहां समाज या सामाजिक संबंध नहीं थे, दूसरे शब्दों में, क्या मनुष्य कभी प्रकृति की स्थिति में रहते थे? अगर हाँ, तो प्रकृति की स्थिति की विशेषता क्या थी? थॉमस हॉब्स, (जो सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत से जुड़े हुए थे), ने इन सवालों के जवाब देने का प्रयास किया।

हॉब्स का विचार था कि मनुष्य के सामाजिक अनुबंध में प्रवेश करने से पहले वे प्रकृति की एक अवस्था में थे। उनके अनुसार, यह प्राकृतिक अवस्था मानव संघर्षों से भरी थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि हर कोई अपनी मर्जी से चलता था और उसपर कोई नियंत्रण करने वाला नही था। मनुष्य ने मात्र उनके व्यक्तिगत लाभ और रुचि के बारे में ही सोचा। यह मानव अस्तित्व की प्राकृतिक अवस्था थी, जो वास्तव में युद्ध की स्थिति थी। यदि व्यक्तियों के बीच कोई विवाद उत्पन्न होता था, तो इसे सुलझाने के लिए कोई भी प्राधिकरण/अधिकारी नहीं था। लोगों की अपनी इच्छा और तरीकों के आधार पर विवादों को हल किया जाता था। इस प्रकार मानव, किसी समग्र नियंत्रण शक्ति के बिना हमेशा युद्ध की एक स्थायी स्थिति में था।हॉब्स के अनुसार, इसलिए मानव अस्तित्व की यह प्राकृतिक अवस्था अत्याचार से भरी हुई थी। चूँकि प्राकृतिक अवस्था में, मानव अनियंत्रित रहता था, इसलिए वे एक दूसरे को आतंकित करते थे, वे केवल स्व–संरक्षण और आत्म–संवर्धन के नियमों द्वारा शासित थे। इस प्रकार, संघर्ष का समाधान निकालने और शांति, संतुलन एवं एक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए मानव जाति ने सामाजिक अनुबंध में प्रवेश किया।

इस प्रकार, हॉब्स के अनुसार, सामाजिक एकीकरण का सबसे अच्छा तरीका एक सामाजिक अनुबंध में प्रवेश करना है। इस अनुबंध में, मानव स्वयं को एक प्राधिकरण को सौंपता है जो संप्रभु और एक पूर्ण शासक है, जिसमें अदृश्य शक्तियां भी है। यह संघर्ष और अराजकता को रोकता है। सभी शक्तियों का तीसरे पक्ष में समावेश करके, मनुष्य कानून का शासन स्थापित करता है। इस प्रकार, हॉब्स के अनुसार सरकार का

मुख्य कार्य सामाजिक एकीकरण और सामाजिक व्यवस्था लाना था (एरिकसन और नीलसन, 2001)।

अपनी प्रगति जाँचे 2

2) सामाजिक एकीकरण के विचार से सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत का पता लगाया जा सकता है। चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत क्या है और यह सामाजिक एकीकरण से कैसे जुड़ा है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 अगस्टे कॉम्टे और सामाजिक एकीकरण का विचार

अगस्टे कॉम्टे, जिन्होंने 'समाजशास्त्र' शब्द दिया, ज्ञान का ऐसा क्षेत्र है जहां समाज के बारे में सिद्धांतों को निर्मित किया जाता है। काम्टे को इस विषय का संस्थापक माना जाता है, जिनके दृष्टिकोण में, उन्नीसवीं सदी जीव विज्ञान की सदी होगी, क्योंकि उनका मानना था कि जीव विज्ञान में क्रमागत विकास का विचार उस समय सबसे शक्तिशाली विचार था। उन्होंने आगे कहा कि जीव विज्ञान समाज के अध्ययन के लिए रूपक प्रदान करेगा। जैसा कि जीव विज्ञान को प्राकृतिक जीवों के अध्ययन के रूप में माना जाता था, समाजशास्त्र को सामाजिक जीवों का अध्ययन माना जा सकता है। कॉम्टे के अनुसार समाज, प्राकृतिक जीव की तुलना में अधिक जटिल था इसलिए उन्होंने समाज को एक जटिल जीव के रूप में माना। उनका विचार था कि जैसे मानव जीव कोशिकाओं से बनता है, सामाजिक जीवों का गठन उन परिवारों द्वारा किया जाता है जिनकी तुलना कोशिकाओं से की जा सकती है। समाज के अन्य सभी भाग परिवार का ही विस्तारित रूप हैं जो समाज की मौलिक इकाई है।

उन्होंने आगे कहा कि जैसे मानव जीव की कई जरूरतें होती हैं, वैसे ही समाज की भी जरूरतें हैं। यदि कोई समाज कायम रहना चाहता है तो जरूरतों की श्रृंखला को पूरा करना पड़ेगा। हालांकि, समाज की सुचारु कार्यप्रणाली के लिए एक बुनियादी जरूरत है जो पूरी होनी चाहिए और यह सामाजिक एकीकरण की आवश्यकता है। यह आवश्यकता वास्तव में समन्वय, नियमन और समाज के विभिन्न हिस्सों के नियंत्रण के बारे में है। जिन समाजों में सामाजिक एकीकरण की इस बुनियादी आवश्यकता को पूरा नहीं किया जा सकता है, वहां सामाजिक 'विकृति' विकसित होने की संभावना है

जो समाज के लिए हानिकारक हो सकती है। कॉम्टे के अनुसार सामाजिक एकीकरण निम्नलिखित तीन तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है:

1) समाज के विभिन्न हिस्सों के बीच पारस्परिक निर्भरता के लिए एक तंत्र का निर्माण करके,
2) राजनीतिक नियंत्रण और विभिन्न प्रणालियों के नियमन और समाज के विभिन्न भागों के लिए शक्ति के मजबूत केंद्र बनाकर। यह वैसा ही है जैसा हमने सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत में देखा है, और
3) समाज की विभिन्न इकाइयों के लिए सामान्य सांस्कृतिक संहिता सुनिश्चित करके।

इसने कॉम्टे के सामाजिक सांख्यिकी के प्रतिमान को जन्म दिया। इसका अर्थ है कि यदि सामाजिक एकीकरण की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है ,तब समाज संतुलन की स्थिति में होगा। यह प्रतिमान बताता है कि जब समाज में सामाजिक विभेदीकरण का स्तर बढ़ता है तो यह समाज में एकीकृत समस्याओं को जन्म देता है। बदले में यह समाज पर इस बात के लिए दबाव बनाता है कि समाज सामाजिक एकीकरण के लिए कुछ नए तंत्र अपनाएं। एकीकरण के नए तंत्र के उद्भव से शक्ति का केंद्रीकरण, सामान्य संस्कृति और संरचनात्मक अंतरनिर्भरता बढ़ती है, जिससे सामाजिक एकीकरण होता है। हालांकि कॉम्टे का प्रतिमान उस स्थिति के बारे में भी बात करता है जिसमें नए तंत्र का उद्भव नहीं होता है। उदाहरण के लिए, समाज के अलग–अलग हिस्सों पर केंद्रीकृत नियंत्रण की कमी से जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के बीच संसाधनों का गैर–समान वितरण हो सकता है। ऐसे परिदृश्य में, समन्वय और नियंत्रण की एकीकृत समस्याएं बढ़ सकती है, जिससे सामाजिक विकृति हो सकती है (टर्नर, 2014)।

अपनी प्रगति जाँचे 3

4) कॉम्टे के सामाजिक एकीकरण के विचार पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5) सामाजिक सांख्यिकी के बारे में कॉम्टे का विचार क्या है और यह सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत के लिए कैसे प्रासंगिक है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 हर्बर्ट स्पेंसर और जैविक समानता

सामाजिक एकीकरण पर विचारों को हर्बर्ट स्पेंसर के कार्यों में बहुत अच्छी तरह से शामिल किया गया है। स्पेंसर ने कॉम्टे के नक्शेकदम पर चलते हुए, (यद्यपि उन्होंने इस बात से इंकार किया) समाज के 'प्राकृतिक विज्ञान दृष्टिकोण' को आगे रखा। उन्होंने कॉम्टे के विचारों को और विकसित किया। स्पेंसर ने मानव जाति की समाज के साथ तुलना की और उनके विभिन्न समानताओं और भिन्नताओं के बारे में बात की। इसे जीव सादृश्यता या समानता के रूप में जाना जाता है।

समानता के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि:

1) जीव और समाज दोनों में अंतर किया जा सकता है, क्योंकि दोनों अकार्बनिक पदार्थ से बने हैं और दोनों में वृद्धि और विकास होता है ।

2) जैसे–जैसे वे बढ़ते हैं, उनकी जटिलता बढ़ती है और उनकी संरचनाएं भिन्न होती हैं। जब जीव बढ़ते हैं, उनके अंग अधिक जटिल हो जाते हैं और विशेष कार्य करके विभेदित हो जाते हैं। समाज के लिए भी यही सत्य है।

3) जैसे–जैसे संरचना बढ़ती है और भिन्न होती है, विभिन्न भागों के कार्य भी भिन्न हो जाते हैं।

4) जीव और समाज दोनों में, इसके विभिन्न भाग एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं इस निर्भरता के बिना वे कार्य नहीं कर सकते। जीव और समाज दोनों को बनाए रखने के लिए भागों की यह अन्योन्याश्रयता आवश्यक है।

स्पेंसर ने दोनों के बीच कुछ भिन्नताएं भी बताई, जो इस प्रकार हैं:

1) समाज की तुलना में जीवों के अंगों की जुड़ाव और निकटता अधिक मात्रा में होती है।

2) विभिन्न भागों के बीच संचार विभिन्न माध्यमों से होता है। जीव में संवाद भागों के आणविक तरंगों के माध्यम से होता हैं, लेकिन समाज के विभिन्न भागों में संवाद सांस्कृतिक प्रतीक जैसे, भाषा के माध्यम से होता है।

3) जैसा कि स्पेंसर ने कहा था,समाज या श्रेष्ठ जीव(सुपर आर्गेनिज्म) में, सभी इकाइयाँ या भाग निर्णय लेने में सक्षम हैं, लेकिन जीवों के मामले में, यह क्षमता केवल मस्तिष्क के पास है।

स्पेंसर आगे कहते हैं कि चूंकि जीवों की कुछ जरूरतें हैं जिन्हें, जीव को बनाए रखने के लिए, या जीवन को बनाए रखने के लिए पूरा किया जाना चाहिए, इसी तरह, श्रेष्ठ जीव की भी कुछ जरूरतें हैं जिन्हें, सामाजिक एकीकरण प्राप्त करनेया समग्र रूप से समाज को बनाए रखने के लिए पूरा किया जाना चाहिए। इन्हें कुछ कार्यात्मक आवश्यकताओं के रूप में समझा जा सकता है जो इसे श्रेष्ठ जीव बनाए रखने के लिए आवश्यक है। ये कार्यात्मक आवश्यकताएं निम्नलिखित हैं:

1) उत्पादन– इसमें संसाधनों का संचय और कच्चे माल का उपयोग करने योग्य वस्तुओं में रूपांतरण शामिल है,जो जनसंख्या को बनाए रखते हैं।

2) प्रजनन– इसमें अपने जैसी संरचनाएँ बनाना शामिल है जो यह सुनिश्चित कर सकें कि नए सदस्यों को आबादी में जोड़ा जाए। इसमें जीवन के तरीके या पूरे समूह को बनाए रखने के लिए संरचना या जीवन में रहने के तरीकों को सीखना शामिल है।

3) नियमन– इसमें व्यक्तियों को नियंत्रित करने के लिए शक्ति और अधिकार का उपयोग और समेकन शामिल है। यह संपूर्ण निगम को एक समाष्टिगत इकाई के रूप में बनाए रखने में भी मदद करता है।

4) वितरण–इसमें भौगोलिक क्षेत्र में लोगों, सूचना और संसाधनों को स्थानांतरित करने के लिए अवसंरचनाओं का निर्माण शामिल है।

इस प्रकार, जैविक सादृश्यता समाज की तुलना मानव जीवन के साथ करता है। जैसाकि मानव में पूरे शरीर को बनाए रखने के लिए, अलग–अलग अंग काम करते हैं इसी तरह, समाज को समग्र रूप से बनाए रखने के लिए समाज के विभिन्न हिस्से एकीकृत और अन्योन्याश्रित होकर कार्य करते हैं (टर्नर, 2014)।

अपनी प्रगति जाँचे 4

6) सामाजिक विज्ञानों में जैविक सादृश्यता क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

7) सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत की समझ के लिए जीव सादृश्यता केंद्रीय कैसे है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.5 इमाईल दुर्खीम और सामाजिक एकता का सिद्धांत

दुर्खीम, जो एक कार्यात्मकतावादी हैं, ने इस बात में रुचि दिखाई कि समाज में सामाजिक व्यवस्था कैसे बनाई रखी जाए। उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के बारे में बात करने के लिए 'सामाजिक एकजुटता' शब्द का उपयोग किया। उनके अनुसार, समाज में संस्थाएँ सामाजिक एकता बनाए रखने के लिए कार्य करती हैं। समाज में श्रम के विभाजन पर लिखते हुए, उन्होंने इस विचार को आगे रखा कि श्रम के विभाजन का कार्य है कि वह सामाजिक व्यवस्था या सामाजिक एकजुटता बनाए रखें। दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों को प्रधानता दी और सामाजिक घटना के समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण की ओर ध्यान दिया। ऐसे कई अन्य तरीके हो सकते हैं जिनसे हम घटना का वर्णन

कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, श्रम विभाजन को आर्थिक शब्दों में वर्णित किया जा सकता है। यह कहा जा सकता है और अर्थशास्त्रियों ने इस विशेष विवरण पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की है, कि श्रम का विभाजन आर्थिक कार्यों का कार्य करता है, क्योंकि यह उत्पादकता बढ़ाता है। हालांकि दुर्खीम ने सामाजिक व्याख्या को प्रधानता दी। उनके लिए, श्रम का विभाजन एक सामाजिक कार्य करता है। यह सामाजिक एकजुटता बनाए रखने में मदद करता है ,क्योंकि श्रम के विभाजन के कारण ही ये इकाइयाँ अन्योन्याश्रित हैं (पोप, 1975)।

धर्म पर दुर्खीम का काम धर्म के समाजशास्त्र और मानव विज्ञान की आधारशिला में से एक है। अपनी पुस्तक, *द एलिमेंटरी फॉर्म्स ऑफ रिलिजियस लाइफ,* में उन्होंने एक ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी समूह *अरून्टा* के बारे में बात की। अरूण्टा समूह अपने कुलदेवता की सामूहिक पूजा करते थे, जिसमें कुलदेवता के पूर्वज एक प्राकृतिक प्राणी थे , जैसे कि पक्षी या जानवर। अरून्टा समूह यह विश्वास करते थे कि वे इन प्राकृतिक प्राणियों के वंशज हैं और प्रत्येक कबीले के अपने विशेष गैर मानव पूर्वज हैं। दुर्खीम ने यह सवाल पूछा कि धर्म व्यक्ति और समाज के लिए क्या करता है? दूसरे शब्दों में धर्म का कार्य क्या है? उन्होंने मूल पहलूओं के बजाय संस्थानों के कार्यात्मक पहलू पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने आगे कहा कि अरून्टा समूह , जब भी कोई धार्मिक प्रदर्शन या कोई त्यौहार मनाता है, तो वे सभी एक साथ इकट्ठा होकर नाचते और गाते हैं। एक साथ इकट्ठा होने और अनुष्ठान करने के इस अधिनियम ने सामूहिक व्यवहार को बढ़ावा दिया। यह सामूहिक चेतना उत्पन्न करने में मदद करता है। बदले में यह सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है। इसलिए, दुर्खीम के अनुसार धर्म का मुख्य कार्य सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देना है। धर्म को परिभाषित कर वह लिखते हैं कि, धर्म लोगों को चर्च नामक एक नैतिक समुदाय में बांधता है। एक चर्च में वे सभी शामिल हैं जो समान विश्वासों और संबंधित प्रथाओं को साझा करते हैं। इस प्रकार, धर्म का एक एकीकृत कार्य व्यक्तियों को एकीकृत करके समाज बनाना है। धर्म व्यक्ति को समाज को आत्मसात करने या समाज को आंतरिक बनाने में भी मदद करता है। दुर्खीम के अनुसार, धर्म के माध्यम से नैतिक मूल्यों का पालन किया जाता है जो सामाजिक एकीकरण की दिशा में योगदान देता है (मूर, 2009)।

जैसा कि इस इकाई में पहले ही उल्लेख किया गया है कि सामाजिक एकीकरण व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों पर जोर देता है।व्यक्तियों द्वारा समाज के नियमों का पालन करवाकर और समाज को अधिक एकीकृत करके सामाजिक एकीकरण को और संभव बनाया जा सकता है,उदाहरण के लिए, जहां पारिवारिक संबंध मजबूत हैं, बच्चे बड़े होकर अधिक आज्ञाकारी और अनुरूप बनते हैं। अपराध विज्ञान में यह सिद्धांत भी एक महत्त्वपूर्ण व्याख्यात्मक उपकरण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक बेहतर एकीकृत समाज में अपराध कम होगा क्योंकि लोग दूसरों की जरूरतों और मांगों के प्रति संवेदनशील होंगे। दूसरी ओर सामाजिक नियंत्रण की चेतना दूसरों की नजरों में अच्छा दिखने की चाहत से उत्पन्न हुई , यह सामूहिकता सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत की पहचान है। ऐसे व्यक्ति जो सामाजिक मानदंडों और नियमों के अनुरूप हैं, वे अपराध करने के लिए कम निर्देशित और प्रेरित होंगे। जिस समाज में सामाजिक मानदंडों का स्तर उच्च है, वहां सामाजिक एकीकरण का स्तर भी अधिक होगा। लोग समाज की संरचना के भीतर अपनी रुचि को केंद्रित करते हैं और सामाजिक हितों से परे सोचने की हिम्मत नहीं करते। अधिक पारंपरिक परिवारों में बड़े हो रहे बच्चे हमेशा अपने बड़ों को खुश करने की कोशिश करते हैं और नैतिक दबाव

के अनुरूप होते हैं। इस प्रकार, दुर्खीम का कहना है कि उन समाजों में जहां सामाजिक एकीकरण कमजोर है,वहां व्यक्तिवाद मजबूत होता है और सामूहिक नियम, मानदंड और मूल्य गौंण बन जाते हैं। दूसरी ओर, वे समाज जहां सामाजिक एकीकरण मजबूत है,वहां व्यक्तिवाद कमजोर होता है और सामूहिक नियम और मानदंड प्रमुख होते हैं।

दुर्खीम का दूसरा उल्लेखनीय कार्य 'आत्महत्या' पर था। उन्होंने उसी शीर्षक *सुसाइड* से एक किताब लिखी। इस पुस्तक में, उन्होंने उन सामाजिक परिस्थितियों को समझने की कोशिश की जिनसे आत्महत्या हो सकती है। अपने इस कार्य में, उन्होंने व्यक्तिगत कारकों और मनोवैज्ञानिक कारकों में सामाजिक कारकों को प्रधानता दी। हालांकि, दुर्खीम के लिए यह व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक कारकों के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है, यह सामाजिक कारकों का एक परिणाम था और समाज में व्यक्ति के एकीकरण की कमी थी। उन्होंने यूरोपीय देशों में आत्महत्या दरों की तुलना की और सांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर उन्होंने कहा कि आत्महत्या में उल्लेखनीय अंतर है। उन्होंने कहा कि प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक देशों के बीच आत्महत्या के दर में अंतर है। प्रोटेस्टेंट देश जो कैथोलिक देशों का विरोध करते हैं,वहां पर आत्महत्या की दर ऊंची है। इसके लिए उन्होंने सामाजिक व्याख्या भी की। दुर्खीम के अनुसार,कैथोलिक देशों में विरोध करने वाले देशों की तुलना में चर्च की नींव अधिक मजबूत है। चर्च ने एक व्यक्ति को समाज में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह लिखते हैं: " कुछ लोगों का एक निश्चित संख्या में मान्यताओं और प्रथाओं का अस्तित्व है, जो वफादारी ,परंपरा और इस प्रकार अनिवार्य अस्तित्वों के लिए सामान्य है, जो समाज को बनाए रखता है। जिन लोगों की सामूहिक मन की अवस्थाएं मजबूत होती हैं, उनका सामुदायिक धार्मिक एकीकरण भी मजबूत होता है और इनका परिरक्षक मूल्य भी अधिक होता है। हठधर्मिता और संस्कार का विवरण गौण है। आवश्यक बात यह है कि वे एक पर्याप्त गहन सामूहिक जीवन का समर्थन करने में सक्षम हैं। और क्योंकि प्रोटेस्टेंट चर्च की अन्य लोगों की तुलना में निरंतरता कम है, इसलिए आत्महत्या रोकने में इनका प्रभाव कम है (गुप्ता, 2005 ;73 से संदर्भित)। "

सुसाइड में, दुर्खीम ने तीन प्रकार के एकीकरण की चर्चा की– धार्मिक, पारिवारिक और राजनीतिक। उनके अनुसार, धर्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है जो व्यक्तियों को सामाजिक मानदंडों और मूल्यों के साथ एकीकृत करने में मदद करता है। यह मजबूत भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बंधन बनाने की पृष्ठभूमि प्रदान करता है। परिवार के स्तर पर, उनका विचार था कि परिवार, पारिवारिक नियमों और मानदंडों के साथ व्यक्तिगत परिवार के सदस्यों के एकीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है। यह समाज में सामाजिक नियंत्रण और व्यवस्था के लिए एक संदर्भ भी प्रदान करता है। जहां तक राजनीतिक एकीकरण का संबंध है, उनका विचार था कि राजनीतिक संघर्ष और उथल–पुथल इस मायने में कार्यात्मक है, कि वे समाज में बेहतर एकीकरण का नेतृत्व करते हैं, क्योंकि वे सामूहिक चेतना और भावनाओं को उत्पन्न करते हैं। राजनीतिक संकट लोगों को आम लक्ष्यों को पहचानने के लिए मजबूर करता है। इस तरह का संकट राजनीतिक संस्थानों द्वारा निभाई गई भूमिका पर भी जोर देता है। इससे व्यक्ति और समाज के बीच मजबूत संबंध बनते हैं।

दुर्खीम के अनुसार, एक विशेष प्रकार की आत्महत्या समाज में सामाजिक एकीकरण की कमी का परिणाम है। उन्होंने तीन तरह की आत्महत्याओं के बारे में बात की–

अहंकारी, परोपकारी और अनियत या विसंगत आत्महत्या। अहंकारपूर्ण आत्महत्या समाज में अत्यधिक व्यक्तिवाद का परिणाम है और एक व्यक्ति का मानना है कि उसका अपने जीवन पर पूरा नियंत्रण है और इसलिए वह इसे खत्म करने का हकदार है। ऐसे व्यक्ति के अज्ञेय होने की संभावना है क्योंकि, जीवन भगवान का उपहार है और ऐसी कोई भी अन्य मान्यता पर वह विश्वास नहीं करेगा। उन्होंने इस आत्महत्या को परोपकारी या परार्थ आत्महत्या के रूप में चिह्नित किया, जब एक व्यक्ति खुद को सम्मान के लिए मारता है, उदाहरण के लिए, भारत में *सती* या जापान में *हारा–किरी* या युद्ध या आत्मघाती हमलें की एक विचारधारा के के रूप में । तीसरी तरह की आत्महत्या को एनोमिक (विसंगति) आत्महत्या कहा जाता है और दुर्खीम के अनुसार, ऐसी आत्महत्याएं सामाजिक विघटन के परिणामस्वरूप होती हैं। यह अंतिम प्रकार की आत्महत्या है जो सीधे तौर पर सामाजिक एकीकरण की धारणा से संबंधित है। इस प्रकार, उन्होंने सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत के साथ–साथ सामाजिक विघटन, इसके कारणों और परिणामों के बारे में भी बात की। (थॉर्लिंडसन और बर्नबर्ग, 2004)।

अपनी प्रगति जाँचे 5

8) सामाजिक एकीकरण पर दुर्खीम के दृष्टिकोण की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 विसंगति और सामाजिक विघटन का विचार

एनोमिक (विसंगति) का तात्पर्य समाज में नियंत्रण या आदर्शहीनता की कमी से है जिससे समाज में विघटन, जैसे परिवार का टूटना, तलाक की बढ़ती दर, विश्वास की कमी और अत्यधिक व्यक्तिवाद उत्पन्न हो सकता है। विसंगति समाज में एक ऐसी स्थिति है जिसमें समाज के मानक और मूल्य टूटते हैं। विसंगति की स्थिति में, समाज में मूल्य और मानदंड स्वीकार नहीं होते हैं और नए मानदंड और मूल्य भी नहीं बनते हैं। यह एक आदर्शहीनता की स्थिति है। इसका परिणाम व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक अवस्था में दिखता है, जो है खालीपन, उद्देश्य की कमी और निराशा के रूप में उभरता है। समाज में जो वांछनीय है उसकी सामान्य परिभाषाएँ समाज खो देता है और जिससे कुछ हासिल करने के प्रयास में लोगों की रुचि ढीली पड़ जाती है। जिसके कारण समाज और उसके मानदंडों से अलगाव की भावना उत्पन्न होती है (टर्नर, 2014)।

एनोमिक (विसंगति)आत्महत्याएं इस सामाजिक विघटन का परिणाम हैं क्योंकि यह समाज से व्यक्ति के अलगाव का कारण बनता है। तेजी से हो रहे शहरीकरण का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने अलगाव की स्थिति पर चर्चा की थी , जहाँ मनुष्य एक दूसरे से संपर्क नहीं करते हैं और सामूहिकता दूर -दूर तक नहीं दिखती है। जब मनुष्य को किसी कार्य को करने के लिए दूसरे की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती, तो वे कोई भी कार्य अच्छा या बुरा कर सकते हैं। इसलिए दुर्खीम, विसंगति और असंगठित आत्महत्या को रोकने के लिए इसके समाधान के रूप में सामाजिक

एकजुटता लाना चाहते थे। लेकिन एक बहुत कठोर समाज व्यक्ति को विकसित होने से रोक सकता है। उदाहरण के लिए अगर बच्चे केवल माता पिता की इच्छाओं के अनुरूप हो तो, वे कभी भी आविष्कारक नहीं बन सकते हैं या विभिन्न चीजों की कोशिश नहीं कर सकते हैं। दुर्खीम का विचार था कि मनुष्य की क्षमताओं को पूरी तरह से महसूस करने के लिए हमें एक सामाजिक विन्यास की आवश्यकता है जो इस तरह की वास्तविकताओं में समाज की मदद करे या यह समाज नियंत्रित और उदारीकृत दोनों होना चाहिए। इसलिए समाज का स्वरूप मानवीय मूल्यों की प्राप्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है। दुर्खीम औद्योगिक दुनिया में अत्यधिक व्यक्तिवाद के विचार के खिलाफ थे। उन्होंने कहा कि वे सामाजिक परिस्थितियां जो अत्यधिक व्यक्तिवाद उत्पन्न करती हैं, वहां सामाजिक नियंत्रण और विनियमन का अभाव होगा और इस प्रकार सामाजिक विघटन या विसंगति हो सकती है।

अपनी प्रगति जाँचे 6

9) विसंगति क्या है और इससे सामाजिक विघटन कैसे उत्पन्न हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.7 दुर्खीम और सामाजिक मानव विज्ञान में उनका प्रभाव

जैसा कि इस इकाई की शुरूआत में ही उल्लेख किया गया है कि, ए.आर. रेडक्लिफ ब्राउन ,दुर्खीम से काफी प्रभावित थे। रेडक्लिफ ब्राउन ने एक ऐसे मानवविज्ञान की कल्पना की, जो समाज को नियंत्रित करने वाले सामान्य कानूनों को बनाने में सक्षम है। उनका यह मानना था कि, प्राकृतिक विज्ञानों की तरह, सामाजिक मानवविज्ञान को कानून बनाने वाला विज्ञान होना चाहिए। वह समाजशास्त्र के प्रत्यक्षवाद के विचार से काफी प्रभावित थे, जिसके अग्रदूत कॉम्टे थे। प्रत्यक्षवाद के अनुसार, समाज का अध्ययन उसी तरह किया जाना चाहिए जैसे प्राकृतिक विज्ञान अनुसंधानों में किया जाता है जो वस्तुनिष्ठ शब्दों में होता है। जो कुछ भी अवलोकनीय है, वह वैज्ञानिक जांच करने योग्य है। समाजशास्त्री और सामाजिक वैज्ञानिकों को कानून बनाने में सक्षम होना चाहिए। समाज उन कानूनों की तरह ही चलता है जो जीवित जीवों के कामकाज को नियंत्रित करते हैं। इसलिए जीव समानता सामाजिक विज्ञान में अध्ययन की आधारशिला बन गया। समाज के वैज्ञानिक जांच करने के क्रम में यह माना गया कि समाज एक समग्र इकाई है। यह ऐसे हिस्सों से बना हुआ है जो परस्पर जुड़े हुए हैं और समग्र रूप से समाज को बनाए रखने के लिए मिलकर काम करते हैं। ब्राउन ने सामाजिक मानवविज्ञान को तुलनात्मक समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में माना, जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्यीकरण को स्वीकार करना है (मूर, 2009)। विभिन्न संस्थानों की तुलना करके समाज, एक कानून बना सकता है ,जिसे सभी समाजों पर लागू किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, रेडक्लिफ ब्राउन ने रिश्तेदारी या नातेदारी व्यवहार के कानूनों को प्रस्तुत किया।

समग्र रूप में समाज का विचार बीसवीं शताब्दी के मानवविज्ञान के लिए इतना केंद्रीय था, कि उसने सामाजिक अस्तित्व के एक महत्वपूर्ण आयाम संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया। विद्वानों ने समाज को उन हिस्सों के रूप में देखा, जिसमें एक दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध है। समाज में प्रत्येक भाग या तो व्यक्ति की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए कार्य करता है या समग्र रूप से समाज को बनाए रखने के लिए। यहां तक कि अपने शुरुआती दिनों में भी मालिनोवस्की, दुर्खीम से प्रभावित थे। उनका सबसे पहला प्रकाशन ऑस्ट्रेलिया में परिवार के बारे में था। इस काम का उप–शीर्षक 'एक सामाजिक अध्ययन' था। इस काम के निष्कर्ष में, मालिनोवस्की ने लिखा है कि सामाजिक संस्थानों जैसे परिवार में सामाजिक प्रकार्य होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके मुख्य कार्य सामूहिकता के बारे में है। वे समग्र रूप से सामूहिकता या समाज को बनाए रखने में मदद करते हैं। बाद में मालिनोव्स्की दुर्खीम से दूर चले गए और अपने व्यक्तिगत जरूरतों पर ध्यान केंद्रित किया (मूर,2009 और गॉर्डन एवं अन्य 2011)।

अपनी प्रगति जाँचे 7

10) सामाजिक मानवविज्ञान में सामाजिक एकीकरण के विचार पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

7.8 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजिक एकीकरण शब्द का अर्थ सीखा। हमने देखा है कि सामाजिक विज्ञानों में सामाजिक एकीकरण को कम से कम दो तरीकों से परिभाषित किया गया है। एक ओर इसका अर्थ एक सामंजस्यपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से है जहाँ समाज के विभिन्न भाग, अर्थात् विभिन्न संस्थाएँ, इसे संपूर्णता में बनाए रखने के लिए कार्य करती हैं। मानवविज्ञान में इसे समाजशास्त्रीय प्रकार्यवाद या संरचनात्मक प्रकार्यवाद के रूप में जाना जाता है जो दुर्खीम के प्रभाव से आया और विकसित हुआ और जबकि मानवविज्ञान में इसका नेतृत्व रैडक्लिफ ब्राउन द्वारा किया गया। ब्राउन ने जैविक समानता के अपनी समझ के आधार पर समाज को समझा। उनके अनुसार जीव में विभिन्न प्रणालियां होती हैं जैसे कि प्रजनन, संचार, पाचन और तंत्रिका तंत्र, उसी तरह समाज में अलग–अलग प्रणालियाँ हैं जैसे नातेदारी, धर्म,आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली। जैसा कि जीव के मामले में, विभिन्न तंत्र मिलकर शरीर को बनाए रखने का कार्य करते हैं, उसी प्रकार एक समाज में, विभिन्न प्रणालियां समग्र रूप से समाज को बनाए रखने के लिए एक साथ कार्य करती हैं।

दूसरी ओर सामाजिक एकीकरण को व्यक्ति के सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और नियमों के लगाव के रूप में देखा गया है। हमने देखा है कि दुर्खीम ने सामाजिक एकीकरण के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से बताया है और उन्होंने व्यक्ति और समाज दोनों के लिए इसके परिणाम की बात की है। समाज, धर्म और आत्महत्या में श्रम विभाजन पर अपने कार्यों के माध्यम से उन्होंने संतुलन और इस सामंजस्य को बढ़ावा देने वाले

विभिन्न संस्थानों के बारे में बात की। बाद में,उन्होंने समाज में तेजी से हो रहे बदलावों के परिणामों के बारे में भी बात की, जिससे विसंगति और सामाजिक विघटन हो सकता है। हमने इस इकाई में थॉमस हॉब्स जैसे दार्शनिकों का सामाजिक एकीकरण पर विचार भी देखा है। अगस्टे कॉम्टे और हर्बर्ट स्पेंसर ने भी सामाजिक एकीकरण की अवधारणा और सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

7.9 संदर्भ

Barnard, A. (2000). *History and theory in anthropology*. Cambridge: Cambridge University

Press.Eriksen, T.H., & Nielsen, F.S. (2001).*A history of anthropology*. Virginia, USA: Pluto Press.

Gordon, R., Lyons, H., & Lyons, A. (2010). *Fifty key anthropologists*. Routledge.

Gupta, A. (2005). *Kierkegaard's Romantic Legacy: Two Theories of the Self*. University of Ottawa Press/Les Presses de l'Université d'Ottawa.

Moore, J.D. (2009). *Visions of culture: An introduction to anthropological theories and theorists*. New York: Altamira Press.

Pope, W. (1975).Durkheim as a Functionalist.*The sociological quarterly*. 16(3), 361-379.

Stolley, K.S. (2005). *The basics of sociology*. London: Greenwood Press.

Thorlindsson, T. & Bernburg, J.G. (2004). "Durkheim's Theory of Social Order and Deviance: A Multi-Level Test". *European Sociological Review*. 20(4), 271-285.

Turner, J.H. (2014). *Theoretical sociology: A concise introduction to twelve sociological theories*. California: Sage.

7.10 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1) उत्तर हेतु भाग 7.1 का संदर्भ लें।
2) भाग 7.2 का संदर्भ लें।
3) भाग 7.2 का संदर्भ लें।
4) भाग 7.3 का संदर्भ लें।
5) भाग 7.3 के तीसरे अनुच्छेद का संदर्भ लें।
6) उत्तर हेतु भाग 7.4 के पहले अनुच्छेद का संदर्भ लें।
7) भाग 7.4 का संदर्भ लें।
8) भाग 7.5 का संदर्भ लें।
9) उत्तर हेतु भाग 7.6 का संदर्भ लें।
10) भाग 7.7 का संदर्भ लें।